जैव विविधता

पा.सं.	पाठ का शीर्षक	कौशल	क्रियाकलाप
11	जैव विविधता	आत्म बोध, विवेकशील सोच, समस्या समाधान, रचनात्मक सोच, निर्णय ले पाना	वृक्षारोपण, जैव विविधता बनाए रखना

अर्थ

पौधे तथा पशुओं की विविधता हमें भोजन, ईंधन, औषधि, आश्रय, तथा अनिवार्य पदार्थ प्रदान करती है जिनके अभाव में हम जीवन बसर नहीं कर सकते। यह प्रजातियां कई हजारों वर्षों में विकसित हुई हैं। मानव प्रक्रियाओं के कारण यह बहुमूल्य विविधता चौंकाने वाली दर से समाप्त हो रही है। हम इन पौधों, पशुओं तथा जीवों की प्रजातियों के संरक्षण के कई तरीके अपना कर अपना योगदान दे सकते हैं। हमारे लिए इन पौधों, पशुओं तथा सूक्ष्मजीवों की विविधता को जानना बहुत महत्वपूर्ण है।

जैव विविधता जैविक विविधता का संक्षिप्त रूप हैं। सरल शब्दों में जैव विविधता किसी क्षेत्र के जीन्स की कुल संख्या, प्रजातियाँ तथा परिस्थितिकी है। इसमें (i) आनुवंशिकी विविधता (ii) प्रजातियों की विविधता तथा (iii) परिस्थितिकी विविधता शामिल हैं।

भारत में जैव विविधता की स्थिति

अपनी विशेष स्थिति के कारण भारत में समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है। यद्यपि भारत का क्षेत्र विश्व की कुल भूमि क्षेत्र का केवल 2.4% है; लेकिन जैव विविधता विश्व प्रजातियों की कुल संख्या का लगभग 8% है। विश्व की वनस्पति की लगभग 12% प्रजातियां 45,000 पौधे के रूप में भारतीय जंगलों में पाई जाती है। विश्व के 12 जैव विविधता के आकर्षण केन्दों में से दो भारत में स्थित हैं। वे हैं: उत्तर-पूर्वी क्षेत्र और पश्चिमी घाट।

जैव विविधता का महत्व

- जीव किसी परिस्थितिकी तंत्र में अन्योन्याश्रित और अर्न्तसंबधित है।
- परिस्थितिकी तंत्र में किसी भी घटक के नुकसान पर परिस्थितिकी तंत्र के अन्य घटकों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- हम भोजन, जल, रेशें तथा ईंधन इत्यादि परिस्थितिकी से प्राप्त करते है।
- यह जलवायु को भी नियमित करती है।

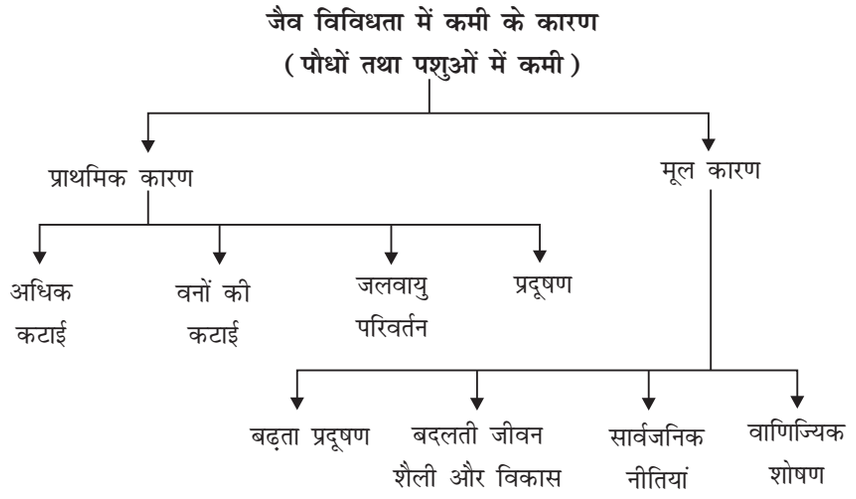

भारत की प्राकृतिक वनस्पति

वनों के प्रकार	वर्षण	तापमान	वृक्षों की प्रजातिया	क्षेत्र	लक्षण
उष्ण कटिबंधीय सदावहार वन	200 से.मी. से अधिक	उष्ण	रोजवुड, आबनूस महोगनी, रबर, जैक लकड़ी, बांस	पश्चिमी घाट, असम के ऊपरी हिस्से, लक्षद्वीप अंडमान निकोबार द्वीप	• इन पेड़ों की पत्तियां किसी विशेष मौसम में नहीं गिरती • घने वनों में मिश्रित वनस्पति • पेड़ों की ऊँचाई 60 मीटर या अधिक
उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन	75–200 से.मी.	उष्ण	सागौन, बांस, साल, शीशम, चंदन, खेर, कुसुम, अर्जुन महुआ, जामुन	दक्कन के पठार, उत्तर पूर्वी क्षेत्र, पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के कुछ हिस्सों को छोड़कर पूरे देश में पाए जाते है।	• नम मौसम • दो भागों में विभाजित आर्द्र तथा शुष्क
कंटीले वन	75 से.मी. से कम	उच्च	अकासिया, बबूल कैक्टस, खजूर, ताड़	उत्तर पश्चिम भारत, प्रायद्वीप भारत के अंदरूनी क्षेत्र	• शुष्क मौसम • लम्बी जड़ें चमकीली मोटी व छोटी पत्तियां
ज्वारीय वन	डेल्टाओं में इकट्ठा पानी		मैंग्रोव या सुंदरी, ताड़, नारियल, क्योरा, अगर	गंगानदी, गोदावरी, कृष्णा, काबेरी सुंदर वन के डेल्टा, अंडमान निकोवार द्वीपसमूह	• पेड़ों की शाखाएं पानी में डूबी रहती हैं। • साफ व नमकीन पानी में उगते हैं।
हिमालयी वनस्पति	तापमान के घटने और ऊँचाई बढ़ने के साथ विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ मिलती है।				

जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता

हम जानते है कि जैव विविधता हमारे अस्तित्व का आधार है। हम भोजन, पानी, आश्रय तथा तंतु को प्रकृति में खोजते हैं। परिस्थितिकी के यह सभी घटक अर्न्तसंबंधित और एक दूसरे पर निर्भर हैं। यदि कोई भी एक घटक बाधित होता हैं तो इसके दूरगामी परिणाम होते हैं तथा परिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन आ जाता है। पौधे हमें भोजन, आक्सीजन प्रदान करते हैं, मृदा अपक्षय रोकते हैं, मौसम नियंत्रण करते है, इत्यादि। इसी तरह वन्य जीवन भी संतुलित आहार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसीलिए जैव विविधता का संरक्षण मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

भारत में वन्य जीवन

भारत में वन्य जीवन समृद्ध है। ऐसा अनुमान है कि पृथ्वी पर पौधों और जन्तुओं की सभी पहचानी गई प्रजातियों का 80% भारत में पाया जाता है। 1972 में वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम वन्य जीवन को बचाने के लिए पारित हुआ। आज 551 वन्यजीव अभ्यारण्य, 96 राष्ट्रीय उद्यान, 25 झीलें, तथा 15 जैव आरक्षित क्षेत्र हैं। इस के अलावा यहां 33 बोटिनिकल गार्डन, 275 प्राणी उद्यान इत्यादि हैं। विशेष परियोजनाएँ जैसे 1973 में बाघ परियोजना, 1992 में हाथी के लिए परियोजना प्रारम्भ की गई है ताकि विलुप्त हो रही प्रजातियों को बचाया जा सके।

स्वयं का मूल्यांकन कीजिए

प्र. ''जैव विविधता के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता है'' इस कथन की पुष्टि उपयुक्त उदाहरण देकर कीजिए।

प्र. वन्य जीव अभ्यारण्य तथा राष्ट्रीय उद्यान में अंतर स्पष्ट कीजिए।

प्र. उष्णकटिबंधीय सदावहार वनों के किन्हीं चार लक्षणों का उल्लेख कीजिए।